असग़र वजाहत के कहानी साहित्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन

राघवेंद्र मिस्कीन*

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19501719

ABSTRACT

असग़र वजाहत का कथा साहित्य समकालीन समाज की जटिलताओं, टूटते पारिवारिक रिश्तों और बदलती सांस्कृतिक संवेदनाओं का यथार्थपरक चित्रण करता है। उनकी कहानियों में जाति-धर्म के नाम पर फैले भ्रष्टाचार, महिलाओं के प्रति अमानवीय क्रूरता (कन्या भ्रूण हत्या और दहेज प्रथा), तथा ग्रामीण भारत की त्रासदियों के बीच राजनीतिक संवेदनहीनता को गहराई से उकेरा गया है। इसके अतिरिक्त, आधुनिकता की अंधी दौड़ में दूषित होती नदियाँ, पश्चिमी संस्कृति का बढ़ता प्रभाव, शिक्षित बेरोजगारों की हताशा और कला-साहित्य के गिरते मूल्य भी उनके विमर्श के प्रमुख विषय हैं। यह रचना-संसार मानवीय संवेदनाओं का एक प्रामाणिक दस्तावेज़ है, जो समाज को आत्मनिरीक्षण के लिए प्रेरित करता है।

KEYWORDS: असग़र वजाहत, समकालीन साहित्य, सामाजिक विघटन, सांस्कृतिक परिवर्तन, स्त्री विमर्श.

* **डॉ. राघवेंद्र मिस्कीन**, हिंदी विभाग, एस.के. कला वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, तालिकोटी.

प्रस्तावना:

असग़र वजाहत समकालीन लेखक हैं। इनके कथा साहित्य कहानी एंव उपन्यास में एक विशेष संवेदना मिलती है। सामाजिक तथा सांस्कृतिक चित्रण इनके साहित्य की विशेषता रही है। लेकिन इनका वैचारिक धरातल अत्यंत विस्तृत है। असग़र वजाहत अपने लेखन के माध्यम से वर्तमान समय के जटिल सवालों को न केवल उभारते हैं बल्कि उनसे मुठभेड़ भी करवाते हैं। असग़र वजाहत का कथा साहित्य हमें अतीत, वर्तमान और भविष्य की सैर कराता है।

असग़र वजाहत के कहानी साहित्य में सामाजिक जीवन

असग़र वजाहत ने अपनी कल्पना के माध्यम से समाज की बदलती संवेदनाओं को बड़ी सूक्ष्मता और गहराई से चित्रित किया है।

1. संबंधों में विघटन (पारिवारिक विघटन)

असग़र वजाहत की कहानी 'कत्लेआम का मेला' कहानी में बूढ़े माँ-बाप से बच्चों के रिश्ते टूटने की अजीब सी घटना मिलती है। इसी कहानी में एक बूढ़ा पिता अपने बेटे की लाश को अपने कंधे पर लादकर ले आता है। आगंन में सुलाता है तो -"बूढ़ा पिता लड़खड़ाकर खड़ा हो गया और हवा में हाथ हिलाने लगा जैसे कुछ पकड़ने की कोशिश कर रहा हो। फिर लोग वहाँ से हट गए। लाश का सिर बुढ़िया ने अपनी गोद में ले लिया। माथे पर से खून में सने बाल हटाए और एक चुम्मा लिया। उसके होंठों पर बेटे का खून लग गया।"1 समाज में होने वाले भयानक दंगे, झगड़ों से, कत्लेआम से भी रिश्तों के टूटने का भय देखने को मिल रहा है।

'ड्रेन में रहनेवाली लड़कियाँ' कहानी में माँ-बेटी के रिश्ते टूटने का चित्रण मिलता है। पुरुष वर्ग से स्त्री वर्ग को एक अभिशाप ही माना जाता है। यह स्त्री-विमर्श की एक श्रेष्ठ कहानी है। पुरुष के दबाव के कारण स्त्री की अस्मिता को ही जलाकर राख कर दिया है।

सरला तीसरी बेटी को जन्म देती है तो पति के घरवाले उससे कोई मिलने नहीं आते। सरला की यह तीसरी बेटी थी, उस बच्ची को सरला ने कुछ समय दूध पिलाया। वह बच्ची को मार देती है। बच्ची का शरीर गटर में बह जाता है। गटर पहुँच जाता है तो सरला की बच्ची स्वप्न में आकर कहती है कि "चलो तुम भी मेरे साथ 'गटर' में चलो। वहाँ बड़ा आराम है।"4 लेकिन अफ़सोस कि बच्ची तो 'गटर में चली गई। माँ नहीं जा सकी। सरला अपनी बच्ची को जाते देखती है। सरला का पति जगदीश्वर दहेज के लिए तथा बेटों के लालच में अपनी पत्नी को घर से बेदखल करने के लिए एक षड्यंत्र रचता है। स्टोव में पूरी हवा भरकर रखा जाता है तो सरला आ उसे स्टोव को जलाती है तो वहीं पर जल कर राख हो जाती है।

जब सरला को जलाकर राख किया जाता है तो उसकी राख को उसी गटर में बहाया जाता है तो "ड्रेन में यानी गंदे नालेवाले बड़े पाइप में सरला को

बच्ची मिल गई। बच्ची तेज़ी से बड़ी हो गई थी। वह माँ को देखकर प्रसन्न हो गई। माँ बेटी से मिलकर जीवन में पहली बार खुश हो गई।"5 यह कहानी समाज में हो रहे अमानवीय कृत्यों, भावनाओं पर एक करारा व्यंग्य करती है।

2. जाति व्यवस्था का बदलता रूप

असग़र वजाहत के कथा साहित्य में जाति विषयक अनेक तथ्य प्रकाश में आए हैं। जैसे

'फ़ैसला' कहानी में जज पर व्यंग्य है। आज हर एक दफ्तर, कचेहरी में जाति धर्म के आधार पर कार्य करते है। समाज का एक कलंकित व्यक्ति अपराधी के स्थान में खड़ा है। जज फैसले से पहले पूछता है -"मी लार्ड सारे सबूत इसके खिलाफ जाते हैं। गवाहों के बयान भी इसे अपराधी साबित करते हैं। इसने हत्या जैसे जघन्य अपराध किया यह समाज का कलंक है इंसानियत के ऊपर धब्बा है इसने पूरे समाज को, पूरी मानवता को कलंकित किया है। यह कातिल है इसे सजा दी जाए फैसला सुनाएं मी लार्ड। जज पहले यह बताओ कि यह हिन्दू है या मुसलमान ?"(14) एक जज को निष्पक्ष होकर न्याय अन्याय को परखना होता है, लेकिन आज जज भी धर्म के आधार पर अपना फैसला सुना रहे हैं। न्याय करने में असमर्थ है क्योंकि जाति - धर्म के खेल से इंसानियत का खेल नहीं रहा है। धर्म के सामने इंसान अंधा हो रहा है।

3. नारी

असग़र वजाहत का लेखन महिलाओं के प्रति अवमूल्यन की समस्या को भी छूता है।

'किरच - किरच लड़की' कहानी में शिक्षित लता श्रीवास्तव की मानसिक दुर्दशा को अभिव्यक्त किया गया है। शिक्षित होकर लता दिल्ली शहर में नौकरी की तलाश में हताश एवं निराश होकर बेचारी घर भी न जा सकती क्योंकि घर की आर्थिक समस्या को सुधारने के कारण कुछ करना चाहती थी लेकिन कुछ करना नहीं हुआ तो अंत में डमी मॉडल बनकर खड़ी होकर पैसे कमाते - कमाते शो विंडो में अपने जीवन का अंत करती है। आज लता जैसे कई लोग शिक्षित होकर नौकरी से वंचित होकर निराशा में अपने प्राणों को त्याग देते है। यही आधुनिक स्त्री की एक समस्या है।

4. ग्रामीण समाज की बदलती दशा

'मुख्य मंत्री और डेमोक्रेसिया' कहानी में असग़र वजाहत एक ऐसे रचनाकार हैं जो आज भी अपनी मिट्टी के प्रति गहरा लगाव रखने वाले हैं। उन्होंने ग्रामीण जीवन में अनेक उतार - चढ़ावों को देखा और भोगा है। ग्रामीण परिवेश की संवेदना उनकी कहानियों में साफ़ - साफ़ दिखाई देती है। अकाल और बाढ़ की विभीषिका कैसी होती है इसका यथार्थ चित्रण असग़रजी के 'मुख्य मंत्री और डेमोक्रेसिया' कहानी में किया गया है। कहानीकार जानते हैं कि अकाल हो या बाढ़ 'मुखमंत्री सुखमंत्री' रहते हैं। बिहार की एक छोटी नदी

कोशी किस तरह तांडव करती है। और यह नदी हर साल कितने लोगों की जान, जानवरों, घर जायदाद को नष्ट करती है। यह पूरे देश को पता है इस विभीषिका का यह एक मात्र चित्र है -"बाढ़ का पानी उतर नहीं रहा। बाढ़ - पीड़ित बाढ़ में फँसे पड़े हैं। लगता है सब कुछ किसी छुपे हुए चित्र में बदल गया है। लोग अपने - अपने बच्चों को कंधों पर उठाए सामान लादे भूखे परेशान, बेघर - बार खड़े हैं। चारों तरफ बाढ़ का पानी है जो उन्हें खा जाने के लिए तैयार है।"29 इस कहानी के द्वारा जन सत्ता पक्ष हो या विपक्ष हों, किस तरह ग्रामीण जनता की इस दुःख भरी हालात का नाजायज फ़ायदा उठाते हैं ; वजाहत ने बड़े ही असाधारण ढंग से यहाँ चित्रित किया है। इस संदर्भ में मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के बीच जो संवाद होता है वह इस बात को ज़ोर नहीं देता है कि सरकार का ग्रामीण असहाय पीड़ित जनता से कोई सरोकार नहीं है।

"मुख्यमंत्री कहते हैं 'बाढ़ रोकना (लेन देन) केन्द्र सरकार की ज़िम्मेदारी है।" प्रधानमंत्री बोले, "नदी आपके राज में है कि हमारे केन्द्र में है ?" मुख्यमंत्री ने कहा, "संसद तो वहीं है .....।" प्रधान मंत्री, "संसद बनाने वाले जानते थे, बार - बार आती रहेगी बाढ़ और आप केन्द्र को परेशान करते रहेंगे। ...." मुख्यमंत्री, "आप इसे परेशानी कहते हैं। हम तो कहते हैं साल भर बाढ़ रहे। जनता की सेवा करने का मौका मिलता रहे। मुख्य मंत्री कोष में पैसा आता रहे।"30

जननेता ऐसे हालत के पैदा हो जाने पर कितने असंवेदनशील हो सकते हैं उसको जानने के लिए यह कहानी एक उदाहरण मात्र है। ग्रामीण जनता से ऐसे तथाकथित नेताओं का सरोकार केवल चुनाव के समय ही होता है ताकि अपने अधिकार की गद्दी सलामत रहे।

असग़र वजाहत के कहानी साहित्य में सांस्कृतिक जीवन

प्रस्तावना:

भारतीय संस्कृति की अपनी निजी पहचान है और भारत एक विविधता में एकता मानने वाला विशाल देश रहा है। यहाँ अनेक जातियों, धर्म, तथा भाषा के लोग रहते हैं तथा उनके मध्य सामाजिक दृष्टि से एक ही संवेदना दिखाई देती है।

असग़र वजाहत अपने कथा साहित्य में सांस्कृतिक जीवन से जुड़े कई विशेषताओं को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं।

सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन (आधुनिक संस्कृति का प्रभाव)

बदलती शिक्षा पद्धति

असग़र वजाहत अपने कथा साहित्य द्वारा शिक्षा पद्धति पर अपने विचारों को प्रकट करते है। 'किरच-किरच लड़की' कहानी उच्च शिक्षित प्रेमियों की कहानी है। दो युवा प्रेमियों में लड़का सिविल इंजीनियर है। लड़की ने एम.बी.ए. किया है। दोनों दिल्ली में नौकरी की तलाश के लिए आते हैं, नौकरी मिलने पर विवश होते हैं। लड़की लता श्रीवास्तव अपने पिता के 'रिटायरमेंट

बेनिफिट्स' के आठ लाख रुपये से एम.बी.ए. करती है। वह नौकरी नहीं मिलने पर एक 'इंटरनेशनल फ़ैशन वर्ल्ड एण्ड एक्सपोर्ट' दुकान पर डमी मॉडल्स के साथ खड़े होकर पैसा कमाना शुरू करती है और वहीं पर अपने प्राण भी गवाँ देती है। आज कल शिक्षित बेरोजगार अपनी नौकरी को लेकर बहुत ही चिंतित हैं।

'मुक्ति' कहानी में एक शिष्य गुरू से कहता है कि –"गुरूदेव बहुत खोजने पर भी मुझे नौकरी नहीं मिली; कोई काम धंधा नहीं है। बेकारी है, दुख है।"(4) नौकरी मिलना बहुत ही मुश्किल है। कई लोग शिक्षित होकर उचित ज्ञानी होने पर भी नौकरी मिलना कठिन बन गया है। आगे गुरू उसे कहता है कि तुमने तो सुना है खोजने पर भगवान मिलना संभव है लेकिन नौकरी मिलना असंभव होते जा रहा है।

आचरण।

'देश के ऊपर बना पुल' कहानी में नदियों को पूजनीय भाव से देखने का देश हमारा था। जिन नदियों में हम अपना पाप को धोकर प्रायश्चित करते थे। आज लोग जिन पवित्र नदियों को खुद ही अपवित्र कर रहे हैं। कोई पूजा सामग्री को फेंकता है, कोई कूड़ा कचरे को फेंकता है। कोई रसायन फैक्ट्री के त्याज्य को छोड़कर आराम से रह जाते है। इसलिए आज नदियों का रूप बदल जल प्रदूषण फैलाकर कई रोगों का केन्द्र बन गया। अब वह पवित्र भाव नहीं रहने के कारण उस नदी के पुल पर खड़े होकर कोई मल - मूत्र करने का चित्रण मिलता है। कहाँ गयी जिन नदियों को इज्ज़त देनेवाली हमारी परंपरा, हमारी सभ्यता पता नहीं। इसलिए हमारे रूढ़ सत्यों के प्रति बदलाव ज़रूर मिलता है। यह देश में नदियों की दुर्दैव स्थिति है।

'ड्रेन में रहने वाली लड़कियाँ' कहानी में मायके के घर से आम तौर पर कुछ लड़के को तोहफ़ा देने की कुछ परंपरा थी। बाद में ये परंपरा एक आचरण बन गयी। जिससे सभी लड़की के घरवालों को ये दहेज प्रथा कष्टदायक होने लगी। फिर भी कैसे भी करके दहेज को देते रहे। लेकिन आज दहेज के साथ पुत्र जन्म देने की प्रथा भी चलकर आ रही है। यदि उस लड़की ने शादी के बाद पुत्र को जन्म नहीं दिया तो उसे दहेज के लिए पीड़ित करना या (संतान हरण) भ्रूण हत्या या लड़की पैदा होने पर उसे तुच्छ रूप से देखना, बहु को जलाकर नयी शादी करके आना आज एक बड़ी महामारी के रूप में स्त्रियों को खा रही है।

कहानी में सरला इस दहेज एवं पुत्र संतान के लिए अपना जीवन नष्ट करती है। उस दिन सरला ने एक पुत्री को जन्म दिया था उसी दिन फ्लश टैंक दबाकर अपनी बेटी को कमोड में डाल देती है। इसी चरंडी पाइप को ड्रेन बोलते है। इस तरह कई स्त्रियों ने अपने प्राणों को गवाँकर ड्रेन में जाकर बैठी हैं।

वेश-भूषा और खान-पान

असग़र वजाहत जी के कथा साहित्य में वेश-भूषा और खान-पान का

चित्रण कई जगह पर उल्लेख हुआ है। जैसे 'आठवाँ आश्चर्य' कहानी में बढ़ते पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव का चित्रण किया गया है। लेखक अपनी पत्नी हसिना तथा बेटी मुनिया को लेकर दिल्ली, आगरा आते हैं। एक नव युवक की जोड़ी आगरा के एक कण्डक्टेड टूर में आकर मिली है। कहानी के अधिकांश हिस्से में ये दोनों लड़का - लड़की भले ही भारतीय होते हुए भी इनका वेश-भूषा, रहन-सहन, खान-पान पाश्चात्य का है-"लड़की की उम्र करीब 20-21 रही होगी उसके साथ लड़का 28-30 के करीब का था दोनों ने रंग उड़ी नीली जींस जैकेट, एक रंग और डिज़ाइन के जूते पहने थे। दोनों ने घड़ियाँ भी मैच करती हुई लगाई थीं। दोनों का जोड़ा बड़ा फब रहा था। हो सकता है मैं केवल मर्दों के नजरिए से कह रहा हूँ लेकिन लड़की लड़के के मुकाबले गजब की चीज थी।" 15 अल्ट्रामाडर्न दिख ही रहे थे दिल्ली महानगर के उत्तर आधुनिकों की तरह आपस में अग्रेजी बोलते है। इसमें लड़की कुछ ज्यादा ही ओवर स्मार्ट बनती दिखाई देती है।

कला, भाषा और साहित्य

'लहर' कहानी में वाचक महान चित्रकलाकार है। लहर एक मन में आने वाले भावोद्रेक के प्रतीक है। वाचक ही कहानी का मूल केन्द्रबिंदू है। कहानी की शुरूआत पूर्व दीप्ति शैली से होती है। वाचक लखनऊ आर्ट्स कॉलेज में डिप्लोमा करते हैं। तीन साल तक पैरिस में फ्रेंच सरकार की स्कालरशिप से अकादमी आफ आर्ट्स में पढ़ाई करके भारत लौटता है। नेशनल एग्जीबीशन होता है जिस में वाचक भी भाग लेते है। वहाँ पर लखनऊ में एक चित्रकलाकार मिलता है। वह वाचक से एक साल जूनियर था। उसके अच्छे मित्र भी थे। वाचक लखनऊ छोड़ने से पहले वे अपनी कई पेंटिंग्स को उस मित्र को रखने के लिए दे कर चले गये थे। लेकिन वहाँ मित्र उन्हीं के पेंटिग्स को अपना कहकर बहुत बड़ा चित्रकलाकार बन जाता है। एग्जीबीशन में भी उन्हीं के पेंटिग्स लगे हुए है। मित्र उन्हें धोखा देकर समाज के सामने अपने को बड़ा चित्रकार कहकर साबित करते है। कई अकादमियों का मेंबर बनता है। उसे कई सम्मान भी मिलते है। वाचक मन में ही दुखित होकर वहाँ से चले जाते है। तब से वे चित्रकला छोड़ देते हैं।

दिल्ली में एक एजेंसी 'डवलप' में काम करते है। अच्छा नाम, प्रमोशन मिलने पर भी स्थिति असहनीय होने के कारण एजेंसी की नौकरी भी छोड़ देते है। दिल्ली में खुद नक्शा बनाकर एक अच्छा सा मकान बनाते हैं। मकान की शिल्पकला को 'स्कूल आफ आर्किटेक्चर' वालों ने पारंपरिक भारतीय भवन निर्माण कला की एक जीवंत शैली माना। उसके बारे में अखबार लेख प्रकाशित करते है।

'सरगम कोला' कहानी में दिल्ली महानगर कला और संस्कृति का प्रमुख केन्द्र रहा है। यह आकर्षण स्थल भी रहा है। छुट्टी के दिनों में मनोरंजन एवं खुशी देते हैं। साथ कला और संस्कृति को लेकर दिल्ली में चहल - पहल बढ़ जाती है।

अंततः असग़र वजाहत ने कला, भाषा एवं साहित्य को लेकर अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है। साहित्यकार प्रबुद्ध होता है। उसका अपना चिंतन होता है। अपने चिंतन के आधार पर वह कृतियों के जरिए से समाज को नए विचार व भाव प्रदान करता हैं। समाज में आज असली साहित्यकारों की कमी लगती है उनकी मानसिकता भी पूरी बदल गई है। सही आदमी की नियति न जुड़कर नकली, झूठे और अप्रामाणिक साहित्यकारों का लेखन बढ़ रहा है। इससे असली साहित्यकार अपना मूल्य खो रहा है।

आधार ग्रंथ:

1. असग़र वजाहत -'कत्लेआम का मेला'-पृ.सं-97-98
2. असग़र वजाहत - डेमोक्रेसिया -'ड्रेन में रहनेवाली लड़कियाँ'– पृ. सं.18
3. असग़र वजाहत - डेमोक्रेसिया -'ड्रेन में रहनेवाली लड़कियाँ'– पृ. सं.19
4. असग़र वजाहत - डेमोक्रेसिया -'ड्रेन में रहनेवाली लड़कियाँ'– पृ. सं.21
5. असग़र वजाहत - भीड़तंत्र – फ़ैसला, - पृ. सं. 105.
6. पिचासी कहानियाँ, असग़र वजाहत,-'मुख्य मंत्री और डेमोक्रेसिया'पृ. सं. 349.
7. पिचासी कहानियाँ, असग़र वजाहत, - 'मुख्य मंत्री और डेमोक्रेसिया'– पृ. सं. 349.
8. असग़र वजाहत – मुक्ति – पृ. सं. 192
9. असग़र वजाहत–'पिचासी कहानियाँ'– मुक्ति- पृ.सं.195-196.